!ढ स्र +ॐ स्र(+ढ) +ं स्रू

. एप्रध्रू +0+ए120+एस्र(+) ॠ+5 +रू

67168स्रए९' स्पद्धत्राइरू

हिमालयी आजीविका सुधार परियोजना
272 C/II, वसंत विहार, देहरादून

हम होंगे कामयाब

अनुभव आदान–प्रदान कार्यशाला

दिनांक – 17 एवं 18 नवम्बर, 2009 को होटल सुरभि पैलेसके सभागार कक्ष में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन प्रातः 9.30 बजे से प्रारम्भ किया गया। सर्वप्रथम आजीविका परियोजना के परियोजना सम्बन्ध सहायक (श्रीमती अर्चना पंवार, सुश्री पूनम पाठक एवं श्रीमती रेनू अधिकारी) द्वारा पांचों जनपदों (अल्मोड़ा, बागेश्वर, चमोली, टिहरी एवं उत्तरकाशी) से आये प्रतिभागियों का स्वागत टीका लगाकर एवं स्कार्फ वितरित कर किया गया। इस कार्यशाला में जिले स्तर के विभिन्न प्रतिभागियों जैसे– स्वयं सहायता समूह, फैडरेशन एवं पंचायत प्रतिनिधि के लगभग 120 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इस कार्यशाला को आयोजित करने का उद्देश्य विभिन्न जिलों से आये प्रतिभागियों का आपस में विचारों के आदान–प्रदान के माध्यम से जिले में संचालित कार्यक्रम में आ रही विभिन्न समस्याओं के निराकरण हेतु प्रयास एवं उपलब्धियों पर विस्तृत जानकारी एवं चर्चा करना था।

प्रतिभागियों का स्वागत

➢ प्रथम सत्र

दिनांक 17 नवम्बर 2009 को शुरू की गई कार्यशाला का विस्तृत वर्णन निम्नवत है–

प्रतिभागी

प्रातः कालीन सत्र में कार्यशाला की शुरूआत प्रेरणादायक प्रार्थना ''इतनी शक्ति हमें देना दाता' के साथ की गई। इस प्रेरणादायक प्रार्थना के पश्चात कार्यशाला का शुभारम्भ दीपप्रज्ज्वलन के साथ किया गया। दीपप्रज्ज्वलन ICIMOD से श्री ध्रुपद चौधरी, IFAD सलाहकार श्री पी.ए. पाठक, पांच जिलों से एक फैडरेशन सदस्यों तथा परियोजना निदेशकके कर कमलों द्वारा किया गया। तत्पश्चात् जनपद उत्तरकाशी से आई सांस्कृतिक टीम द्वारा 'ईश वन्दना' की गयी। स्वागतगीत गाया गया। कार्यशाला में प्रतिभागियों को प्रेरित करने के उद्देश्य से अभिप्रेरणा गीत ''हम होगें कामयाब'' उत्तरकाशी की महिलाओं द्वारा गाया गया। तत्पश्चात् होटल सुरभि के सभागार में स्थापित स्टॉल पर अपने–अपने जिले की महिलाओं द्वारा उत्पादित उत्पादन एवं आयवृद्धि पर चर्चा दूसरों जिलों के प्रतिभागियों के साथ की गई।

- ✓ कार्यशाला का उद्घाटन करते हुये परियोजना निदेशक ने आजीविका परियोजना के विभिन्न चरण एवं घटकों के विषय में जानकारी देते हुये बताया कि उत्तराखण्ड राज्य हिमालय की गोद में बसा हुआ राज्य है एवं इस राज्य को देवभूमि भी कहा जाता है इस देवभूमि में मानव की दिनचर्या को चलाने के लिए विभिन्न तरह के प्राकृतिक संसाधन इस राज्य में उपलब्ध है। इन प्राकृतिक संसाधनों का दोहन उचित तरीके से किया जाये तो उत्तराखण्ड राज्य में गरीबी एवं बेरोजगारी जैसी विकट समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। इन समस्याओं के समाधान के लिए हमकों सिर्फ एक प्रयास करने की जरूरत है एक कदम उन्नति की ओर बढ़ाने की जरूरत है क्योंकि अनुभवों के आदान–प्रदान से ही मनुष्य ने अपनी सोच को बदला है एवं इसी अनुभवों की आदान–प्रदान कार्यशाला के माध्यम से जो आपके अनुभव

कार्यशाला को सम्बोधित करते परियोजना निदेशक

क्षेत्र में प्रगति ला रहे है उन अनुभवों को इस कार्यशाला में अभिव्यक्त कर अन्य प्रतिभागी भी उन अनुभवों को अपने दैनिक जीवन में समाहित कर उसका लाभ उठाकर अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाने का एक सफल प्रयास कर सकते है।

- ✓ हम होंगे कामयाब कार्यशाला में अपने अनुभव आदान प्रदान करेंगे, वे अनुभव जो हमने खुद से किया है तथा स्वयं सहायता समूह बनाते हुए आगे बढ़ रहे हैं। अभी तक हमने क्या–क्या किया और आगे की हमारी क्या योजना है। हमारा मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समुदाय की आजीविका को बढ़ाना है।
- ✓ हिमालय क्षेत्र के निवासी अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा भाग्यशाली हैं क्योंकि इस क्षेत्र के उत्पाद की बाजार में बहुत अधिक मांग है। इस मांग का फायदा उठाने के लिए हमें अपने उत्पाद की गुणवत्ता बाजार मांग मूल्य के निर्धारण के बारे में सीखना होगा साथ ही उत्पाद की आय में वृद्धि हो यह भी सीखना होगा। कार्यशाला के यह दो दिन हम सबके लिए महत्वपूर्ण है कि हम सामूहिक रूप से क्या–क्या कर सकते हैं यह सीख हमें यहां मिलेगी।
- ✓ GTZ, ICIMOD अन्य रेखीय विभागों के साथ परियोजना कन्वर्जेन्स कर विभिन्न कार्यकलाप कर रही है। हम यह सीख सकेंगे कि कन्वर्जेन्स के माध्यम से और क्या क्या कर सकते हैं। दुनिया के 70 प्रतिशत लोग मिडिल स्तर पर हैं एवं इससे आगे जाना चाहते हैं तथा वे लोग जिनके आय 100 रू0 प्रतिदिन से अधिक नहीं है उन सब की क्षमता कैसे आगे बढ़ाये इस पर सोचने की आवश्यकता है विशेष रूप से हिमालय क्षेत्र में। हिमालय क्षेत्र में प्राकृतिक सम्पदा एवं आध्यात्मिक सम्पदा दोनों को जोड़कर कैसे आजीविका को बढ़ाये जाये इस बारे में हमें सोचना है।
- ✓ राज्य के अन्य जनपदों एवं अन्य राज्यों की नजर इस परियोजना पर है कि हम अपने उद्देश्य में कितना सफल हो रहे हैं। उनके सामने हमने उदाहरण रखना है। उन्होंने सभी से कहा कि आप इस कार्यशाला से नई सोच लेकर जाएं, नया सीखें तथा आपको एक दूसरे से नया करने की प्रेरणा मिलेगी। आपको अपने अनुभव बांटते हुए महसूस होगा कि आपने कितना कुछ किया है। इन विचारों के साथ परियोजना निदेशक ने सबको शुभकामनाएं दी।

➢ स्टाल भ्रमण

सभी स्टॉल का भ्रमण प्रतिभागियों द्वारा समूह बनाकर किया गया। बारी–बारी से जनपदवार समूह प्रत्येक जनपद की स्टॉल में गये जहां उन्होंने जनपद की गतिविधियों की जानकारी ली तथा अपने–अपने सुझाव भी दिये।

- ✓ अल्मोड़ा के स्टाल में भट्ट, गहत, सोयाबीन, धनिया, झंगोरा, हल्दी, मडुवे का आटा, मोमबत्ती, रिगाल से बनी वस्तुएं, शाल, मफलर तथा परियोजना क्षेत्र की जानकारी संबधित चार्ट, सहकारिता से संबधित चार्ट एवं अखबारों की कटिंग से संबधित चार्ट आदि वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया था।
- ✓ जनपद बागेश्वर के स्टॉल में समूह द्वारा बनाये गये ऊन के जूतों, बुने हुये टेबल क्लाथ, चीड़ की लकड़ी के उत्पाद तथा तांबे द्वारा निर्मित बर्तनों को प्रदर्शित किया गया।

जनपद अल्मोड़ा

जनपद बागेश्वर

जनपद चमोली

जनपद टिहरी

जनपद उत्तरकाशी

- ✓ जनपद चमोली के स्टॉल में कालीन, पंखी, तथा कृषि उत्पादों को प्रदर्शित किया गया।
- ✓ टिहरी के स्टाल में अलग–अलग ब्लॉक के समूहों द्वारा तैयार सामग्री का प्रदर्शन किया गया जिसमें मक्का का आटा, सोयाबीन, झंगोरा, गहत, चौलाई, सर्फ, फिनाइल, मोमबत्ती रखी गयी थी एवं चार्ट के माध्यम से की गयी गतिविधि का भी चित्रण किया गया।
- ✓ उत्तरकाशी के स्टॉल में लाल चावल व राजमा को मुख्य रूप से रखा गया थी। जिला प्रबन्धन इकाई, उत्तरकाशी द्वारा एक मॉडल प्रदर्शित किया गया जिसमें परियोजना द्वारा सम्पादित समस्त गतिविधियों को दर्शाया गया। जिसमें चारानांद, वर्मी, नैपियर, क्रायलर, रेन वाटर हार्वेस्टिंग टैंक, निर्धूम चूल्हा आदि दिखाया गया।
- ✓ **RED(GTZ)** के स्टॉल में कृषि उत्पाद की ग्रेडिंग एवं वैल्यूचेन को प्रदर्शित किया गया।
- ✓ परियोजना मुख्यालय के स्टॉल में परियोजना की विभिन्न संचार सामग्री के साथ परियोजना की उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया।

मुख्यालय स्टॉल

RED (GTZ)

➢ द्वितीय सत्र

दूसरे सत्र में सभी प्रतिभागियों को दो समूहों में बांटा गया – प्रथम समूह में समूह/फेडरेशन प्रतिनिधि तथा दूसरे समूह में WBR सदस्य।

- ✓ प्रथम समूह ने ''मेरी कहानी कार्यशाला'' समूह/फेडरेशन सम्बन्धी चर्चा में प्रतिभाग किया। इस चर्चा में तीन विषयों पर अनुभवों का आदान–प्रदान किया गया,

  मैं स्वयं (व्यक्तिगत)

  हमारा समूह

  हमारा फेडरेशन

मेरी कहानी अनुभव आदान–प्रदान

उक्त अनुभव आदान–प्रदान मुख्यतः आय में वृद्धि तथा आ रही बाधाओं से सम्बन्धित थे। इस कार्यशाला की संक्षिप्त आख्या निम्न है–

जौनपुर के किशोरी समूह द्वारा नारी समाज पर किये जाने वाले जुल्म एवं परियोजना के द्वारा नारी समानता को गीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। जिसमें गीत के बोल 'मेरी शक्ति पहचानो' थे। साथ ही 'न काटा यू डाल्यो न काटा दीदी' पर्यावरण प्रस्तुति गीत के माध्यम से पर्यावरण संग्रहण के संदेश को समुदाय तक पहुंचाने का प्रयास किया गया।

श्रीमती वन्दना देवी ने बताया कि मेरे समूह का नाम अलकनंदा आजीविका स्वयं सहायता समूह है जिसमें हमनें 20 रूपये की शुरू में बचत की। पहले हमें छोटी–छोटी जरूरत के लिए साहूकार के पास जाना पड़ता था परन्तु आज हम हिमालयी आजीविका सुधार परियोजना के माध्यम से गठित समूह के पास इतना पैसा है कि अपनी जरूरत को अपनी बचत से पूरा करते है।

टिहरी जनपद से आयी समूह की अध्यक्षा ने बताया कि पहले हमारे छोटे–छोटे समूह बनाये गये। समूहों से हमारी छोटी–छोटी जरूरतों की पूर्ति तो हो रही थी परन्तु हमारे उत्पादन का हमें सही व वाजिब दाम नहीं मिल पा रहा था इसलिए हमें फेडरेशन की आवश्यकता पड़ी। आजीविका द्वारा की गयी गतिविधियों की पूर्ण जानकारी सहकारिता सचिव द्वारा फन्ड के माध्यम से बतायी गयी।

चमोली टीम द्वारा राजमा के एकत्रीकरण के बारे में बताया कि राजमा एकत्रीकरण सहकारिता के माध्यम से किया जा रहा है। पांचों जनपदों से आये प्रतिभागियों द्वारा अपनी–अपनी समस्याओं का निराकरण एक दूसरे से प्रश्न पूछकर कर किया।

चन्द्रबदनी फेडरेशन अध्यक्षा श्रीमती कौंसा भट्ट ने बताया कि हमारे फेडरेशन में 75 समूह है एवं 5 सब कलस्टर है। हमारे फेडरेशन में माल्टा जूस, मोमबत्ती, कायलर पालन से अपने फेडरेशन सदस्यों को आयवर्धक गतिविधि से जोड़ा गया जिसमें हमने पहले अपनी बचत एवं सी0सी0एल0 का पैसा लगाया। CCL का पैसा हमने बैंक को वापस कर दिया।

✓ द्वितीय समूह ने ''सामाजिक आर्थिक वर्गीकरण अनुभव आदान–प्रदान'' पर चर्चा की। इस कार्यशाला में सभी जनपदों के WBR सदस्यों ने आर्थिक वर्गीकरण प्रक्रिया के दौरान अपने अनुभवों का आदान–प्रदान किया। इस कार्यशाला में सरकार द्वारा किये जाने वाले बी0पी0एल0 सर्वे पर चर्चा की गई।

WBR अनुभव आदान–प्रदान

इस कार्यशाला के मुख्य बिन्दु निम्न थे–

<u>आर्थिक वर्गीकरण एवं</u> <u>BPL/APL सर्वे में तुलनात्मक अध्ययन</u>

सामाजिक–आर्थिक वर्गीकरण **(WBR)**	**बी0पी0एल0 सर्वे**
1. सामुदायिक एवं जन प्रतिनिधियों के सहयोग से सर्वे किया गया। 2. गांव में तीन ग्रुपों के माध्यम से सर्वे किया गया। महिला गांव के गणमान्य व्यक्ति एवं मिश्रित समूह। 3. समुदाय की सर्व सहमति से पात्र लाभार्थियों को 1 से 4 श्रेणी में रखा गया। 4. आर्थिक वर्गीकरण की समय सीमा तीन वर्ष रखी गयी। 5. परियोजनाओं द्वारा आर्थिक वर्गीकरण पात्र लाभार्थियों को क्रमशः 1 श्रेणी से 4 श्रेणी में न्यूनतम से अधिकतम अंक रख कर किया जाये।	1. सरकारी कर्मचारियों द्वारा बिना सामुदायिक सहमति से सर्वे किया गया। 2. चन्द लोगों के माध्यम से सर्वे किया गया। 3. सरकारी मानकों के आधार पर सर्वे किया गया। 4. जबकि शासन द्वारा APL/BPL सर्वे समय सीमा 10 वर्ष रखी गयी। 5. प्रशासन के पंचायत/ब्लॉक स्तरीय कर्मचारी द्वारा शासन के दिये गये सुख सुविधा पर अंक निर्धारित कर सर्वेक्षण किया गया।

<u>WBR प्रक्रिया के फायदे</u>

1. समुदाय में हासिए में रह रहे व्यक्तियों का प्रतिभाग
2. भ्रष्टाचार में कमी।
3. WBR प्रक्रिया का संचालन ग्राम समुदाय द्वारा स्वयं किया जाना।
4. इस प्रक्रिया से वास्तविक लाभार्थी की पहचान।
5. वास्तविक स्थिति जानने के लिए घर–घर जा कर पुष्टि।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

दिनांक **18-11-2009**

प्रतिभागियों द्वारा प्रथम दिन की

दूसरे दिन की शुरूआत प्रार्थना के साथ की गयी तथा पहले दिन की कार्यशाला में हुई चर्चाओं को फिर से दोहराया गया। सत्र का संचालन समन्वयन अधिकारी अल्मोड़ा श्री कमलेश जोशी द्वारा किया गया।

- प्रथम सत्र में सभी प्रतिभागियों को तीन समूहों में बांटा गया। प्रथम समूह में समूह फेडरेशन को कैसे सशक्त करेंगे, द्वितीय समूह में फेडरेशन समूहों को कैसे सशक्त करेंगे एवं तृतीय समूह में उद्यम स्थापना हेतु विषय पर चर्चा की गई। तीनों में समूहों में चर्चा के दौरान निम्न बिन्दु उभरे–

फेडरेशन समूह को कैसे सशक्त करेंगे–

1. समूह को सशक्त करें जिससे कि बैंक के साथ आसानी से ऋण हेतु आवेदन किया जा सके।
2. समूह प्रोत्साहक द्वारा दिये गये दिशा निर्देशों को समूह में लागू करवायें।
3. सदस्य धैर्य व जागरूकता के साथ समूह से जुड़े।
4. समूह को प्रशिक्षण/शैक्षिक भ्रमण के माध्यम से शिक्षित किया जायेगा।
5. फेडरेशन अपनी बैठकें कलस्टर के ग्रामों में बारी–बारी से करेगा जिससे उस गांव के सभी समूह फेडरेशन की बैठकों में भाग ले सकेंगे।
6. रेखीय विभागों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए योजनाओं का लाभ समूहों को दिलवाना।
7. विभिन्न योजनाओं से जुड़े कार्यकर्ताओं को समूह की बैठकों, प्रशिक्षणों में आमंत्रित करना।
8. फेडरेशन स्वयं भी प्रशिक्षण लेंगे जिससे उनकी भी जानकारियां बढ़ सके।
9. समूह के उत्पादों के विपणन हेतु प्रयास करना।
10. समूह के रजिस्टर, लेन–देन आदि रिकार्ड की निरन्तर जांच करना तथा उनके सही रखरखाव हेतु समूह को सहयोग करना।
11. पुरूषों का योगदान लेंगे।

फेडरेशन समूह की प्रस्तुति

समूह फेडरेशन को कैसे सशक्त करेंगे–

1. जागरूक एवं जिम्मेदार सदस्यों का फेडरेशन प्रतिनिधि हेतु चयन करना।
2. फेडरेशन की बैठकों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना।
3. फेडरेशन बैठकों में दी गई जानकारियों को समूह सदस्यों तक सही रूप से पहुंचाना तथा उन पर चर्चा करना।
4. फेडरेशन द्वारा दी गई जिम्मेदारियों का उचित ढंग से निर्वाह करना।
5. समूह की कमजोरियों पर फेडरेशन में चर्चा करना।

उद्यम स्थापना के अनुभव–

1. क्षेत्रीय जलवायु के अनुरूप उद्यम का चयन।
2. कार्य योजना का उचित निर्धारण एवं व्यवसाय का पूर्ण ज्ञान।
3. आत्मविश्वास, ईमानदारी, इच्छा शक्ति।
4. कच्चे माल की सुगम व्यवस्था।
5. उद्यमिता को उचित प्रशिक्षण व्यवस्था ।

उद्यम स्थापना की चर्चा करते

6. कृषि आधारित उद्यमों के लिए मृदा परीक्षण तथा प्रमाणित बीज व्यवस्था।
7. उचित मूल्य निर्धारण।
8. दुग्ध व्यवसाय हेतु क्षेत्रीय स्तर पर नस्ल सुधार की व्यवस्था।
9. अभिलेखो का उचित रखरखाव।
10. पारदर्शिता होना।
11. जोखिम उठाने की क्षमता।
12. बाजार सर्वेक्षण एवं विपणन केन्द्र की व्यवस्था।

जनपद टिहरी से आई हुई सांस्कृतिक टीम द्वारा ''दरिया की कसम, लहरों की कसम, ये ताना बाना बदलेगा। तू खुद को बदल, तू खुद को बदल, तभी तो जमाना बदेगा'' कव्वाली प्रस्तुत की गयी।

➢ विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों द्वारा जानकारी दी गईः

- परियोजना के कन्वर्जेन्स सलाहकार श्री दिलीप चन्द आर्य द्वारा विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी दी गयी, जिसमें उन्होंने सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं विभागों (NGO) से कन्वर्जेन्स की सलाह दी। परियोजना द्वारा किये गये कार्यो की सराहना की– जैसे जिला टिहरी गढ़वाल में समविकास योजना का उदाहरण बताया। परियोजना प्रबन्धक डॉ0 हीराबल्लभ पन्त को बधाई दी। इसी के साथ सभी प्रबन्धकों को किसी न किसी विभाग के साथ इस तरह से कन्वर्जेन्स करने का सुझाव दिया।

श्री लखचौरा जी फाइनेंस सम्बन्धी जानकारी देते हुए

- उत्तराखण्ड सूक्ष्म वित्त एवं आजीविका संवर्धन सहकारिता संस्थान के महा प्रबन्धक श्री सतीश लखचौरा द्वारा संस्थान की योजनाओं की जानकारी दी गयी। जिसमें उन्होने बताया कि यह बैंक शहरी गरीबों हेतु व ग्रामीण गरीबों हेतु वित्तीय सहायता के रूप में कार्य कर रहा है। जिसमें उन्होने बताया कि रू0 5 करोड द्वारा रूपये के एवज में 4.5 करोड़ का लोन दिया जा चुका है व 50 लाख का लोन ग्रामीण समूहों को दिया गया है। इस प्रकार बैंक ने 60 लाख रूपये का ब्याज अर्जित किया है।
- बैंक फेडरेशनों को भी यह वित्त पोषण की व्यवस्था कर सकता है इसके लिये उन्हे 500 के 50 अंश लेने होंगे और वह बैंक की वित्त पोषण योजना का फायदा ले सकते है। उन्होंने बताया कि यह बैंक शहरी क्षेत्र के श्रस्ळ के माध्यम से कार्य कर रहा है।

GTZ द्वारा जानकारी दी गई

- इसमें उपरांत RED (GTZ) के सलाहकार श्री विजय रावत द्वारा बताया गया कि परियोजना मुख्य रूप से जड़ी–बूटी बेमौसमी सब्जी इत्यादि **value chain** पर कार्य कर रही हैं। उनके द्वारा बताया गया कि मूल्य श्रृंखला क्या होती है ओर इसमें विभिन्न आयाम क्या–क्या है। श्री रावत द्वारा GTZ के समस्त विशेषज्ञों का परिचय भी कराया गया व उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी भी दी।
- मार्केट लाइट संस्था द्वारा फोन के माध्यम से मार्केट रेट कैसे पता कर सकते है के बारे में जानकारी दी गयी।

इस सत्र के पश्चात जनपद टिहरी, उत्तरकाशी व अल्मोड़ा द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

मार्केटलाईट द्वारा जानकारी दी गई

➢ समापन सत्र

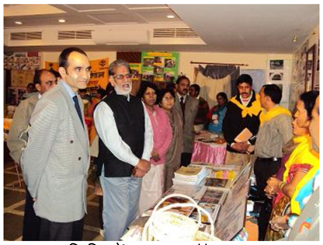

अतिथियों द्वारा स्टॉल भ्रमण

समापन सत्र में मुख्य अतिथि विश्व खाद्य कार्यक्रम की राज्य परियोजना निदेशक श्रीमति निर्मला गुप्ता, विशिष्ट अतिथि उत्तराचंल ग्रामीण बैंक के अध्यक्ष श्री श्रीश कपूर, महिला समाख्या की राज्य परियोजना निदेशक एवं टिहरी की मा0 उपाध्यक्ष जिला पंचायत का स्वागत अल्मोड़ा के बुनाई सेन्टर में महिलाओं द्वारा तैयार किये गये शॉल पहनाकर स्वागत किया गया। अतिथियों द्वारा सभी जनपदों द्वारा लगायी गयी स्टाल का भ्रमण किया गया व समूह तथा फेडरेशन सदस्यों से जानकारी ली।

दो दिवसीय कार्यशाला के अनुभव प्रतिभागियों ने अपने ग्रुप की संस्तुति के रूप में अतिथियों से बांटे जो कि निम्न प्रकार से है–

अल्मोड़ा की श्रीमती भूमिलता जी ने समूह कैसे फेडरेशन को सशक्त कर सकता है कि बारे में बताया :

- समूह में आन्तरिक लेन–देन
- स्वंय सहायता समूह सदस्यों का मीटिंग में प्रतिभाग
- स्वयं सहायता समूह जागरूकता प्रशिक्षण का आयोजन
- फैडरेशन द्वारा दी जाने वाली सेवाओं सा समूह को लाभ उठाना चाहिए।

कार्यशाला के अनभव बांटते प्रतिभागी

टिहरी से श्रीमती कौशा भट्ट ने बताया कि फैडरेशन कैसे समूह को सशक्त करेंगे :

- सभी स्वयं सहायता समूह का इस में जुड़ाव होना चाहिए।
- पारदर्शिता का होना अति आवश्यक है।
- स्वयं सहायता समूह को फैडरेशन का मूल्यांकन करना चाहिए।
- फैडरेशन के माध्यम से प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाना चाहिए।
- धन की व्यवस्था करना भी फैडरेशन की जिम्मेदारी होती है।
- स्वयं सहायता समूह द्वारा बनाया गया उत्पाद के लिए बाजार व्यवस्था कराना भी फैडरेशन की पूर्व जिम्मेदारी है।

टिहरी के पंचायत प्रतिनिधि श्री जगदीश द्वारा आर्थिक वर्गीकरण के बारे में बताया। श्री जगदीश द्वारा बताया गया परियोजना द्वारा किये गये आर्थिक वर्गीकरण से सही पात्र लाभार्थी को लाभ मिला है।

✓ समूह/फेडरेशन सदस्यों को सम्मानित किया गया :

1. टिहरी के चन्द्रबदनी स्वायत्त सहकारिता फैडरेशन की अध्यक्षा श्रीमती कौशा भट्ट, उत्तरकाशी की श्रीमती विशैला देवी, चमोली के पर्वतीय स्वयत्त सहकारिता की अध्यक्षा सूरमा देवी, अल्मोड़ा की संतोषी देवी, बागेश्वर की श्रीमती मीरा रौतेला को अल्मोड़ा के बुनाई सेन्टर में महिलाओं द्वारा तैयार किये गये शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया। इन महिलाओं द्वारा समूह/फेडरेशन के साथ विशिष्ट कार्य किये गये।

समूह/फेडरेशन सदस्यों को सम्मानित

2. टिहरी जनपद से मगनी देवी उनकी बहादुरी के लिए परियोजना निदेशक द्वारा विशेष रूप से सम्मानित किया गया। मगनी देवी को बहादुरी के लिए राष्ट्रपति द्वारा भी पुरूस्कृत किया गया।

✓ **सभी अतिथियों ने अपने–अपने विचार प्रकट किये :**

मुख्य अतिथि कार्यशाला को सम्बोधित करते

- विशिष्ट अतिथि उत्तराचंल ग्रामीण बैंक के अध्यक्ष श्री श्रीश कपूर जी ने कहा कि आजीविका एक ऐसी परियोजना है जो सम्पूर्ण उत्तराखण्ड की महिलाओं का उत्थान कर सकती है। उन्होंने कहा कि परियोजना ने महिलाओं को जागरूक कर उनके अन्दर शक्ति भर दी है। स्वंय सहायता समूह मे अधिक से अधिक आन्तरिक लेन–देन होना चाहिए ताकि समूह की आय में वृद्धि हो सके। इसके अलावा श्री कपूर ने बीमा कराने पर भी जोर दिया तथा किसान क्रेडिट कार्ड बनाने को कहा। जिसमें बैंक से लोन लेने में आसानी होती है। इसे बैंक द्वारा बनाया जाता है। उन्होंने कहा कि हमें उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग करना चाहिए ताकि हमें सब्जियों में अच्छी बचत हो सके।
- विशिष्ट अतिथि महिला समाख्या की परियोजना निदेशक श्रीमति गीता गैरोला ने कहा कि बहुत ही अच्छा लग रहा है कि हमारी बहने आज आगे बढ़ रही है। यहां पर महिलाओं द्वारा प्रस्तुतीकरण बहुत ही अच्छा रहा। उन्होंने कहा कि मैं अपनी बहनों से अनुरोध करती हूं कि जो चीज हम उत्पादन करे उसे आगे लाकर अच्छी मार्केट प्रदान करने पर जोर दें। उन्होंने कहा कि महिलाओं को भी क्रेडिट कार्ड मिलने चाहिए ताकि महिलायें भी किसी पर निर्भर ना रहे।
- जिला पंचायत टिहरी की माननीया उपाध्यक्ष श्रीमती मीरा सकलानी ने कहा कि आजीविका परियोजना द्वारा किया जा रहा कार्य बहुत ही सराहनीय है। आजीविका की पहल से आज हमारी माताएं–बहने काफी जागरूक हो गई है। महिलाओं को पंचायत में भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए ताकि विकास कार्यों में महिलाओं का भी योगदान हो सके। उन्होंने आजीविका परियोजना द्वारा किये गये डब्लू0बी0आर0 की भी सराहना की।
- विश्व खाद्य कार्यक्रम की राज्य निदेशक श्रीमती निर्मला गुप्ता जी ने कहा कि स्वयं सहायता समूह को आयवर्द्धक गतिविधियों के साथ–साथ संगठन द्वारा किया जाने वाले सामुदायिक कार्य जैसे शराबबन्दी आदि से भी जुड़ना चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में सुश्री विनीता जी द्वारा साथ सभी का धन्यवाद करते हुए कार्यशाला का समापन किया गया।

➢ अनुभव आदान–प्रदान कार्यशाला में चर्चा के दौरान निकली संस्तुतियां इस प्रकार हैं–

✓ **आर्थिक वर्गीकरण/बी0पी0एल0 सर्वे के लिए जन प्रतिनिधियों के सुझाव**

1. बी0पी0एल0 सर्वेक्षण हेतु मानकों का निर्धारण सही तरीके से किया जाना चाहिए ताकि गांव के गरीब पात्र व्यक्ति को लाभ मिल सके।
2. बी0पी0एल0 राशन कार्ड धारकों को बिना नम्बर के बी0पी0एल0 ID नम्बर दिया जाये।
3. आर्थिक वर्गीकरण की प्रक्रिया काफी सरल एवं पारदर्शी है तथा इसमें गांव के सभी लोगों का प्रतिभाग सुनिश्चित किया जाता है, उसके बाद श्रेणीकरण किया जाता है। अतः शासन को इसी विधि को अंतिम रूप दे कर स्वीकृति प्रदान की जाये।
4. बी0पी0एल0 सर्वेक्षण की सीमा 10 वर्ष से घटा कर 5 वर्ष रखी जाये।

✓ **सफल उद्यम स्थापना एवं सुझाव**

1. कार्य योजना का उचित निर्धारण एवं व्यवसाय का पूर्ण ज्ञान।
2. क्षेत्रीय जलवायु के अनुरूप उद्यम का चयन।
3. आत्मविश्वास, ईमानदारी, इच्छा शक्ति।
4. कच्चे माल की सुगम व्यवस्था।
5. उद्यमिता को उचित प्रशिक्षण युक्त ।
6. कृषि आधारित उद्यमों के लिए मृदा परीक्षण तथा प्रमाणित बीज व्यवस्था।
7. उचित मूल्य निर्धारण।
8. दुग्ध व्यवसाय हेतु क्षेत्रीय स्तर पर नस्ल सुधार की व्यवस्था।
9. अभिलेखो का उचित रखरखाव।
10. पारदर्शिता होना।
11. जोखिम उठाने की क्षमता।
12. बाजार सर्वेक्षण एवं विपणन केन्द्र की व्यवस्था।

सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद देते हुए कार्यशाला का समापन किया गया।

धन्यवाद ज्ञापन

उद्यमी बनाने में जुटी 'आजीविका'

मीडिया की नजर में कार्यशाला